भूमिका

प्रस्तुत शोध में शिवमूर्ति की कहानी 'तिरिया चरित्तर' पर बासु चटर्जी के फिल्मांकन का उद्देश्य फिल्म के शीर्षक के साथ प्रश्न- चिन्ह के प्रयोग से ही स्पष्ट हो जाता है। 'तिरिया चरित्र ?' शीर्षक के साथ लगाया गया प्रश्न इस अर्थ में भी विचारणीय प्रश्नों को उठाता है,कि हमारे समाज में स्त्री और चरित्र को लेकर जो मान्यताएँ पहले से विधमान हैं, क्या वह वाजिब है या गैर-वाजिब ? जैसा कि संरचनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट है कि हमारा समाज पुरुष-प्रधान समाज है, जहाँ स्त्रियों की स्वतंत्रता हमेशा से किसी न किसी रूप में बाधित रही है। इससे यह भी स्पष्ट है कि चरित्र संबंधी जितने भी प्रश्न खड़े किए जाएंगे ,उसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संबंध पुरुष से न होकर स्त्रियों से ही होगा। ऐसी मान्यताओं के बावजूद तिरिया चरित्र पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगाना बासु चटर्जी द्वारा रचनात्मक और आवश्यक प्रश्नों की ओर इशारा करना है। यह स्पष्ट अर्थो में परंपरावादी सोच के विपरीत एक प्रगतिशील अवधारणा को व्यक्त करता है। इस विषय का मूल्यांकन इन्हीं पंक्तियों के आधार पर किया जा सकता है कि आखिर वे कौन से कारक हैकि चारित्रिक मूल्यों को ढोने के लिए स्त्रियाँ ही बाध्य की जाती हैं।

कहानी और फिल्म की पात्र विमली उन तमाम मूल्यों को अंत तक ढोती है जिनमें स्त्री के चरित्र और उसकी यौन शुचिता की मांग करने वाला समाज संतुष्ट हो सके लेकिन ऐसा होता नहीं है। अंतत: उसे तिरिया-चरित्तर की उस परिभाषा में जड़ दिया जाता है जिसमें पुरुष के तमाम दोषों को समेटकर स्त्री के पक्ष को नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। शिवमूर्ती की यह कहानी उन तमाम परतों को खोलती है जिनमें स्त्री के लिए परिस्थितियाँ ,मान्यताएं दिखाई देती हैं। यहाँ कला के माध्यमों का अध्ययन करते हुए उसके भिन्न-भिन्न आयामों के आधार पर यह देखना भी आवश्यक हो जाता है कि शिवमूर्ति की कहानी पर बनी फिल्म और मूल कहानी की संप्रेषणीयता दोनों में किस प्रकार का वैविध्य है ? प्रस्तुत शोध के माध्यम से इस प्रश्न को तलाशने का प्रयास किया गया है। भाषाई प्रतीक व्यवस्था को दृश्य प्रतीक व्यवस्था में बदलते समय फिल्मकार ने किन तथ्यों को ध्यान में रखा है और जो कहानीकार चाहता है वह फिल्म में आ पाया है या नहीं? यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि किन पक्षों को लेकर फ़िल्मकार सजग है और किन्हें उसने किस रूप में फिल्माया है। प्रस्तुत शोध की प्राक्ल्पना का यह हिस्सा रहा है जिसे हमने शोध के दौरान भिन्न -भिन्न दृष्टियों से देखने का प्रयास किया है।

शिवमूर्ती हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार हैं। शिवमूर्ति दलित, स्त्री और किसान चेतना से संपन्न रचनाकार हैं। शिवमूर्ति को अपने जीवन में सामंतवाद के शिकंजे में छटपटाते जनजीवन से कदम-कदम पर संघर्ष करना पड़ा था ।

जाति,धर्म के नाम पर इंसान-इंसान के बीच भेद-भाव की पीड़ा उन्होंने भोगी है। शिवमूर्ति की रचनाएं दलित, स्त्री, किसान विमर्श जीवन के अन्य अनुभवों से आकार लेती हैं। इन्हीं अनुभवों से वे कथा रचनाएं निकली है, जिन्होंने अपनी स्थाई छाप छोड़ी। शिवमूर्ति के लेखन की दुनिया में उनकी पत्नी 'सरिता' एंव बालसखा 'शिवकुमारी' का खास हाथ है। नाच-गाकर पेट पालती बेडिऩ जाति की शिवकुमारी ने संघर्षों में पिसते शिवमूर्ति को कदम-कदम पर मदद की सरिता ने उन्हें पढ़ाई के प्रति सचेत बनाए रखा। शिवमूर्ति की कहानियां है- कसाईबाड़ा, अकालदंड, सिरी उपमा जोग, भरतनाट्यम, तिरिया चरित्तर, केशर कस्तूरी, और ख्वाजा ओ मेरे पीर। शिवमूर्ति की जितनी भी रचनाएँ देखने को मिलती हैवह सभी रचनाएं चरित्र प्रधान हैं। यही कारण है कि उनके पात्र हमारी स्मृति में टिके रहते हैं। शिवमूर्ति की स्त्री प्रधान कहानी 'तिरिया चरित्तर' ने तो हिंदी साहित्य में हलचल पैदा कर दी। कहानी की स्त्री पात्र विमली पर उसके ससुर की कुदृष्टि और उसका बलात्कार करने के बाद विमली पर ही दोषारोपण और पंचायत द्वारा टिकुली लगाने की जगह पर गरम कलछुल से दागे जाने का फैसला सुनाया जाता है, फिर गर्म लोहे की कलछुल खाल से छूते ही विमली की चीत्कार रूह को कँपा देती है। पंचायत में विमली के साथ एक जानवर जैसा व्यवहार किया जाता है इससे यह साबित होता है कि आज भी हमारे भारतीय समाज में स्त्री को आजादी का अधिकार नहीं है। विधिवत शुरू हुए स्त्री विमर्श से बहुत पहले उनकी कहानियां हस्तक्षेप करती हैं। दलित विमर्श से अलग 'तर्पण' जैसी रचना किसी को भी विचारोत्तेजित कर देती है। सच्चाई यह है कि आम आदमी के सुख-दुख को कथाकार्य की तरह समझने और हु-बू-हु पन्नों पर उतारने वाले शिवमूर्ति की सबसे उपलब्धि पाठकों का भरोसा ही है। शिवमूर्ति की कहानी 'तिरिया चरितर' पर निर्देशक बासु चटर्जी के निर्देशन में फिल्म बनी है। यह फिल्म एक घंटा बीस मिनट की है। इस फिल्म की मुख्य पात्र राजेश्वरी,ओमपुरी और नसीरुद्दीन शाह हैं।

प्रस्तुत शोध में केन्द्रीय विषय के रूप में शिवमूर्ती की कहानी तिरिया चरित्तर को लिया गया है , जिसमें कहानी और फिल्म को आधार बनाकर विश्लेष्ण किया गया है। 'तिरिया चरित्तर' की पात्र विमली जो बड़ी हिम्मत और जतन से स्वंय को अपने अनदेखे पति के लिए सुरक्षित रखती है, वह अपने ही ससुर के धार्मिक कपट और वासना का शिकार होकर दंड भोगती है। किंतु वह प्रतिरोध भी करती हैं। यही प्रतिरोध उसे त्यागपत्र की मृणाल से अलग करता है और प्रेमचंद की 'धनिया', नागार्जुन की 'उग्रतार' या रांघेय राघव की 'गदल' से जोड़ता है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से विमली के उस चरित्र को समझने का भी प्रयास किया है, जो फिल्म और कहानी में दर्शाया है क्योंकि विमली का चरित्र ही इस फिल्म में मुख्यत: दिखाया गया है कि पुरुषवादी समाज में स्त्री से

किन चारित्रिक विशेषताओं की उम्मीद की जाती है। दरअसल विमली के चरित्र को लक्षणात्मक ढंग से कहानीकार और फिल्मकार ने दर्शाया है पूरी फिल्म में विमली तयशुदा सामाजिक मूल्यों का अनुसरण करती है और अंत में उन्हीं मूल्यों के द्वारा उस पर आक्रमण भी किया जाता हैं। दरअसल फिल्म में पुरुषों के चरित्र को दर्शाते हुए विमली की समर्पणशीलता को दिखाया गया हैं।

इस शोध का प्रथम अध्याय –

प्रथम अध्याय अंतरप्रतीकात्मकता : अर्थ और परिभाषा

के अंतर्गत हमने अंतरप्रतीकात्मकता को व्याख्यायित किया है जिसमें शोध की आवश्यकतानुसार अंतरप्रतीकात्मकता को प्रस्तुत करना आवश्यक था, अत: इस अध्याय में हमने अंतरप्रतीकात्मकता के अर्थ और परिभाषा को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत अध्याय शोध-विषय की रूप रेखा और उद्देश्य को समझने के लिए एक व्याकरणिक ढांचे के रूप में व्याख्यायित किया गया है, जिससे बिंदुवार तरीके से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों कला रूपों में समानताएं और असमानताएं किस रूप में मौजूद हैं. इसलिए कला के रूपों को ध्यान में रखते हुए इस अध्याय में अंतरप्रतीकात्मकता को अर्थ और परिभाषा के आधार पर व्याख्यायित किया गया है.

प्रस्तुत शोध के दूसरे अध्याय :- 'फिल्म और कहानी के कथानक का अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन' के अंतर्गत **कथानक, पात्र, संस्कृति, स्त्री-पुरुष संबंध, भाषा** आदि उप-अध्यायों के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक-संबंधों का अध्ययन किया गया है| किसी भी फिल्म के अध्ययन के लिए उसके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है जिसके लिए फिल्म देखने वाले दर्शक की प्रतिक्रिया को आधार बनाया जाता है प्रस्तुत शोध में क्योंकि फिल्म और कहानी दोनों को आधार बनाकर अंतरप्रतीकात्मकता को तलाशना है इसलिए विभिन्न समीक्षाओं के माध्यम से और शोध की अपनी खोज के दौरान जो तथ्य प्रकाश में आए उन्हें इस अध्याय में शामिल किया गया है।

तीसरे अध्याय तिरिया चरित्तर का अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन' इस अध्याय में शोध उपलब्धियों का वर्णन और विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के आधार रूप में 'तिरिया चरित्तर' कहानी और बासु चटर्जी की फिल्म 'तिरिया चरित्र ?' को लिया गया है। इस आधार पर अंतरप्रतीकात्मकता के आधार पर विश्लेष्ण एंव निष्कर्ष को दर्शाया गया है।

उपसंहार के तहत सभी अध्याय और उसके उप-अध्यायों के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है| इसके तहत सभी बिन्दुओं पर क्रमानुसार विचार किया गया है।

परिशिष्ट के तहत 'तिरिया चरित्रर' के रचनाकार शिवमूर्ति का साक्षात्कार लिया गया गया है।

फिल्म के चित्र और संवाद के तहत आवश्यक चित्रों और संवादों का उल्लेख किया गया हैं।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध के दौरान हमने निम्नलिखित शोध प्रविधियों का प्रयोग किया हैं।

तुलनात्मक शोध प्रविधी इस शोध की सबसे महत्वपूर्ण प्रविधि है क्योंकि जब हम अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन करते हैतो इसी प्रविधि के तहत हम कहानी और फिल्म की तुलना करते हुए विभिन्न आधारों पर उसकी व्याख्या करते हैअत: दूसरी प्रविधि **व्याख्यात्मक शोध प्रविधी** है जिसमें हम दृश्य प्रतीक और भाषिक प्रतीक की तुलना करते हुए व्याख्या करते हैऔर दोनों के संप्रेषण स्तर को जांचते हैं।

तीसरी प्रविधि जो इस शोध का आधार भी है वह है अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन प्रविधि ।